डॉ० अमरनाथ झा

जन्म : 1897 ई०।

जन्म-स्थान : पाहीटोल, सरिसब, मधुबनी ।

मृत्यु : 2 सितम्बर, 1955 ई०।

कृति : मैथिली साहित्य परिषदक अध्यक्षीय भाषण तथा विभिन्न पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित **निबंध** ।

संपादन : **'हर्षनाथ काव्य ग्रन्थावली'** एवं गोविन्ददासक **' शृंगारभजन'** ।

मिथिलाक गौरव पद्म विभूषण डॉ० झा मूलत: अंग्रेजीक मूर्धन्य विद्वान छलाह परन्तु हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, बंगला एवं मैथिली भाषा पर सेहो हिनक अद्‌भुत अधिकार छलनि । अल्प वयसहिमे प्राध्यापक एवं तदुपरांत कुलपति सेहो बनि गेलाह । नओ वर्ष धरि इलाहाबाद विश्वविद्यालयक कुलपति रहलाह । एकर अतिरिक्त बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयक कुलपति, बिहार लोक सेवा आयोगक अध्यक्ष आदि अनेक पदकेँ सेहो सुशोभित कयलनि ।

पाठ-सन्दर्भ : प्रस्तुत पाठ मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगाक वार्षिकोत्सवक अवसर पर देल गेल अध्यक्षीय भाषणक संक्षिप्त अंश थिक। जाहिमे मैथिली साहित्यक प्राचीनता तथा समकालीन भाषा सभक संग तुलनात्मक व्याख्याक संगहि अपन मातृभाषाक उत्थानक लेल एक दिशानिर्देश सेहो देल गेल अछि । यद्यपि ई भाषण आइसँ करीब बासठि वर्ष पूर्व देल गेल छल तथापि भाषाक सन्दर्भमे जे सकारात्मक दृष्टिकोण एहिमे अभिव्यक्त भेल अछि तकर सार्थकता एखनो अछि।

मैथिली साहित्य

मातृभाषामे भक्ति ककरा नहि होइत छैक ? जन्महिसँ जे बोली माइक मुहेँ सुनबाक सौभाग्य होइत छैक, जाहि बोलीक स्वर आजन्म मर्मस्पर्शी होइत छैक, जाहिमे अपन हृदयगत भावक स्वतः उद्‌गार होइत छैक, तकर परित्याग केओ कोना कऽ सकैत अछि ? मैथिलीक सेवा करबामे, मैथिलीक उन्नतिक इच्छा करबामे, मैथिलीक प्रचारक उद्योग करबामे, कोनो प्रकारक यदि उदासीनता हमरा लोकनि देखाबी तँ लज्जाक विषय थिक। सम्भव जे किछु प्रगतिशील व्यक्तिक धारणा ई होइनि जे एहिसँ भारतक राष्ट्रीयताक क्षति होइतैक। सम्भव जे किछु सज्जनक ई विचार होइनि जे एहि प्रयत्नक फल ई होइतैक जे भिन्न-भिन्न प्रान्तमे प्रान्तीय भाषाक प्राधान्यसँ राष्ट्रभाषाक प्रचारमे बाधा होइतैक। सम्भव जे हमरोमेसँ किछु एहन विद्वान होथि जे एहि तरहक प्रयासमे निन्दा बुझथि किएक तँ हम सभ प्रान्तान्तरसँ फराक भऽ जायब। सम्भव जे हिन्दीक दुराग्रही समर्थक हमरा सभहिक राष्ट्रद्रोही, हिन्दी विद्वेषी इत्यादि रूपेँ वर्णन करथि। परन्तु एहि संकीर्ण, निराधार, कटु समालोचनाक भयसँ हम अपन कर्त्तव्यपथसँ भ्रष्ट नहि होयब।

हम ई स्पष्ट कऽ देबय चाहैत छी जे हमर ई इच्छा नहि जे मैथिली हिन्दीक स्थान लेअय। हिन्दीकेँ हम राष्ट्रभाषा मानैत छी, हिन्दीक हम यथासाध्य सेवा करब, हिन्दीक समस्त देशमे प्रचार हो, तकर हम उपाय करब। परन्तु, हमरा इहो कहैत संकोच नहि जे हिन्दी हमर मातृभाषा नहि थिक। हिन्दी हमर मातृभाषाक स्थान नहि लऽ सकैत अछि। हिन्दीक व्यवहार हम अपन नेना सभमे, अपन स्त्रीवर्गमे, अपन घरक काजमे नहि कऽ सकैत छी। राष्ट्रभाषा प्रचारक अर्थ ई नहि जे प्रान्तीय भाषा सभक हानि हो अथवा ओकर लोप हो।

प्रत्येक साहित्यक भाषामे पद्यक अतिरिक्त गद्य-गन्थहुँक रहब आवश्यक। यदि मैथिली केवल 'बोली' रहैत तँ एहिमे गद्य-ग्रन्थक अस्तित्व नहि रहैत। परन्तु भारतक बहुत कम प्रचलित भाषामे ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर'

सँ प्राचीन अथवा विलक्षण गद्य ग्रन्थ उपलब्ध अछि। मैथिलीमे छओ सय वर्ष पूर्व एहन सुन्दर ग्रन्थ रचना भेल जकर साम्य आधुनिक गद्य कठिने कऽ सकैत अछि। एकर शैली तँ ठाम-ठाम वाणक 'कादम्बरी'क शैलीक तुलना कऽ सकैत अछि। एहन सुन्दर गद्य कोनो प्रचलित भाषामे भेटब कठिन। एहि ग्रन्थक किछु उदाहरण सुनू। नायिकाक वर्णन-

"जाक मुखक शोभा देखि पद्म जलप्रवेश कएल,
आँखिक शोभा देखि हरिण बन गेल,
केशक शोभा देखि चमरी पलायन कएल,
दाँतक शोभा देखि दाड़िम हृदय विदीर्ण कएल,
अधरक शोभा देखि प्रवाल द्वीपान्तर गेल,
कानक शोभा देखि बौद्ध ध्यानस्थित भेल,
कंठक शोभा देखि कम्बु समुद्र प्रवेश कएल"।

जे वाक्य हम उद्धृत कयलहुँ अछि ताहिसँ ई स्पष्ट होयत जे आइ जे हमर भाषाक स्वरूप अछि ताहिसँ कतेक कम भेद छओ सय वर्ष पूर्वक रूपमे छल आओर कोनो प्रचलित भाषा एतेक प्राचीन समयसँ तादृक् रूपमे संरक्षित नहि अछि– ई वैशिष्ट्य मैथिलीएटामे अछि।

कमसँ कम छओ सय वर्षक गद्य-पद्य-विभूषित मैथिली साहित्य आओर मैथिली भाषाक अस्तित्व मेटाओल जाय से हमरा कखन स्वीकार भऽ सकैत अछि? ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, गोविन्ददास, दामोदर, श्रीनिवास, गदाधर,चन्द्रकला, (विद्यापतिक पुत्रवधू), पूरनमल्ल, हरिदास, रामदास, गङ्गादास, यशोधर, उमापति, गङ्गाधर, प्रीतिनाथ,जयकृष्ण, भवानीनाथ, धरणीधर, गोविन्द, मधुसूदन, चतुर्भुज, जीवनाथ, श्यामसुन्दर, लालकवि, दुर्गादत्त, मनबोध, भैरोनाथ, हरिपति, भंजनकवि, नन्दीपति, देवानन्द, रमापति, रत्नपाणि, भीष्म, महन्थ साहेबराम, रंजनकवि, यशोधर, राजलक्ष्मीनारायण, कवि मुकुन्दी, राजकंसनारायण, लोचन, लखनचन्द, अमृतकर, भानुनाथ, हर्षनाथ, चन्दा झा इत्यादि कविश्रेष्ठक कृति हम कोना बिसरि सकैत छी ? जे साहित्य उत्तर भारतक कोनो आओर साहित्यसँ काव्यमे, नाटकमे, गद्यमे, न्यून नहि तकर ह्रास हो, क्षति हो, लोप हो– से हमरा कखन सह्य भऽ सकैत अछि ? जाहि भाषाकेँ हम अपन माइक मुहेँ सुनलहुँ आओर जन्महिसँ सिखलहुँ तकरा हम बिसरि जाइ अथवा भाषान्तरक स्नेहक कारणेँ तिरस्कार करी से कोना सम्भव ?

बहुत विरोधीगणक ई कथ्य छनि जे प्राचीन समयमे यद्यपि किछु ग्रन्थ मैथिलीमे लिखल गेल, आब ई साहित्यक भाषा नहि। ई कथा सर्वथा असत्य। उदाहरणार्थ, बँगला साहित्यक इतिहास देखू, जहिया माइकेल मधुसूदनदत्त साहित्य सेवा करय लगलाह ओहि समयमे बँगला साहित्यक दशा की छल? प्राचीन गीत आओर भजन छोड़ि ओहि भाषामे आओर साहित्यक कोन अङ्ग छल? अथवा हिन्दी साहित्यक इतिहास देखू। सत्तरि वर्ष पूर्व हिन्दीमे कोनो उपन्यास, नाटक, आख्यायिका, प्रबन्ध, जीवन-चरित, इतिहास वर्तमान नहि छल। बँगला अथवा हिन्दीक सम्बन्धमे ओहि समय यदि केओ कहैत जे एहि दुनू भाषामे प्राचीन भजन छोड़ि आओर कोनो साहित्यक लेश नहि आओर एही आधार पर यदि हिन्दी आओर बँगलाक साहित्य रचना बन्द कऽ देल जाइत तँ जे उन्नति एहि दुनू साहित्यमे भेल से कोना सम्भव होइत ? शिक्षा-विभागसँ उत्साह देल नहि जइतनि, बँगभाषी आओर हिन्दी भाषा-भाषी यदि अपन-अपन मातृभाषाक सेवा नहि करितथि तँ आइ एहि भाषा-द्वयक दशा की होइत? मैथिलीक स्थिति एखन ओहने अछि जे साठि वर्ष पूर्व हिन्दीक छल। पद्य-काव्य छोड़ि आओर हिन्दीमे कोन साहित्य छल ? मैथिलीमे तँ गद्य-ग्रन्थ, नाटक सेहो अछि, एतबा अंशमे हिन्दीसँ उन्नत अवस्था अछि। परंतु मैथिलीअहुक उन्नति आओर साहित्यक वृद्धि तहिखन होयत जखन ई स्कूल, पाठशाला इत्यादिमे पाठ्य विषय भऽ जायत आओर शिक्षित मैथिल समुदाय मातृभाषामे ग्रन्थ-रचना करत। मैथिली-पत्र-पत्रिकाक संचालकगणक अनुभव तँ यैह छनि जे ग्राहकक संख्या तत थोड़ भेलनि जे पत्र बन्द कऽ देमय पड़लनि। एहि उदासीनतासँ काज नहि चलत। ई नितान्त लज्जाक विषय थिक जे चारियो-पाँच टा पत्र एहि देशमे प्रकाशित नहि भऽ रहल अछि। प्रत्येक विषय पर, प्रत्येक श्रेणीक उपयोग हेतु, पाठ्य-पुस्तकक रचना होमक चाही। विज्ञान, भूगोल, इतिहास, गणित– सभ विषयपर जखन पुस्तक तैयार भऽ जायत तखन शिक्षा-विभाग ओकरा स्वीकार करबामे आपत्ति नहि करत। जनतासँ सहायताक आशा अधिक नहि, परन्तु एखनहुँ देशमे एहन बहुत मैथिल छथि जे द्रव्यक दान दऽ अपन साहित्यानुराग तथा देशाभिमानक परिचय दऽ सकैत छथि। यदि पुस्तक-प्रकाशनार्थ कोषक आयोजन हो तँ हमहूँ यथाशक्ति सहायता करब। मैथिल महासभाक गत अधिवेशनमे जे प्रस्ताव मैथिली साहित्यक प्रसंग स्वीकृत भेल तकरा कार्यरूपमे परिणत करबाक हेतु प्रयत्न करवाक चाही। वर्षमे चारि-पाँच सय रुपैया

पुस्तक-प्रकाशनार्थ एकट्ठा करब दुस्तर नहि। यदि तीन-चारि प्रयत्नशील विद्वान् ई कार्य अपना ऊपर लेथि तँ बहुत शीघ्र उत्तम साहित्य-भण्डार प्रस्तुत भऽ सकैत अछि।

हम अपन भाषा आओर साहित्यसँ अनुराग करी से सर्वथा उचित। अपन पूर्वजक कृतिकेँ सुरक्षित राखी सेहो उचित। ओकर प्रति गौरव स्वाभाविक। परन्तु हमर आओरो कर्त्तव्य अछि। केवल भाषाक रक्षा कर्त्तव्य नहि, एकर उन्नति हो, एहिमे उच्च कोटिक साहित्यक दिनानुदिन सृष्टि हो, सर्वसाधारणमे एकर शुद्ध रूपमे प्रचार हो– सेहो हमर कर्त्तव्य थिक। काज कयनिहारक संख्या तँ सभ संस्थामे थोड़े होइत छैक, परन्तु आवश्यकता अछि तत्परताक, उत्साहक, अनवरत परिश्रमक। आवश्यकता अछि मुद्रणार्थ धनक, सफलतार्थ ग्राहकक, प्रान्तीय शिक्षा-विभागसँ सहयोगक, विश्वविद्यालयक कृपा-दृष्टिक । आवश्यकता अछि जनकतनयाक अनुकम्पाक।

●

शब्दार्थ : यथासाध्य = सामर्थ्यभरि; दुराग्रह = हठ, जिद; चमरी = चमरी गाय; अधर = ठोर; प्रवाल = मूँगा; कम्बु = शंख; ह्रास = पतन ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. 'मैथिली एक समृद्ध भाषा थिक'- कोना ?
2. 'वर्णरत्नाकर' क लेखक के छथि ? ई कोन रूपेँ अपन समकालीन रचनाकार सभसँ भिन्न छथि ?
3. 'वर्णरत्नाकर' क शैलीक तुलना लेखक कोन पोथीसँ कयने छथि ?
4. मातृभाषाकेँ बिसरि जायब निन्दनीय अछि। किएक ?
5. मातृभाषाक प्रति हमरा लोकनिक की-की कर्त्तव्य होयबाक चाही ?
6. मातृभाषा मैथिलीक उन्नति कोना होयत ? लेखकक मन्तव्यक आलोकमे अपन व्यक्तिगत विचार लिखू ।
7. प्राचीन मैथिली गद्यक प्रसंग लेखकक धारणाकेँ स्पष्ट करू ।
8. राष्ट्रभाषा एवं मातृभाषाक सन्दर्भमे डॉ० झा की अन्तर पाबैत छथि ?

9. साहित्यिक प्रयाणक अपन आरम्भिक चरणमे हिन्दी ओ मैथिलीक दशाकेँ लेखक आलोकमे स्पष्ट करू।

गतिविधि :

1. एहि निबंधमे वर्णित रचनाकार लोकनिक नाम कंठस्थ करू ।
2. एहि निबंधक आधारपर साहित्यक विभिन्न विधाक नाम लिखू ।
3. 'जाक मुखक ..... समुद्र प्रवेश कएल', एकरा कंठस्थ करू।
4. पाठमे वर्णित दस तत्सम एवं दस तद्भव शब्दक सूची बनाऊ ।
5. पाठमे प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दक सन्धि-विच्छेद करू : प्रान्तान्तर, उदाहरणार्थ, भाषान्तर, साहित्यानुराग, देशाभिमान, प्रकाशनार्थ ।

निर्देश :

(क) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ छात्रकेँ बोली आ भाषामे की अन्तर छैक तकर ज्ञान कराबथि।

(ख) 'जाक मुखक..... समुद्र प्रवेश कएल',क अर्थ छात्रकेँ शिक्षक बुझाबथि।

(ग) एहि निबंधमे जाहि रचनाकार लोकनिक नाम आयल अछि, हुनका सँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।

(घ) ज्योतिरीश्वरक अन्य कृतिसँ सेहो छात्रकेँ परिचित कराओल जाय ।

(ङ) ''मैथिली पत्र-पत्रिकाक वांछित विकासक बाधक स्वयं मैथिल समुदाय छथि''– लेखकक एहि धारणाक मूलमे निहित भावसँ छात्रकेँ अवगत करबैत हुनका मैथिली पत्र-पत्रिका कीनबा एवं पढ़बाक लेल प्रेरित कयल जयबाक चाही ।

□